एक कथा

इलाज

एक मोची के पेट में मरोड़ उठी। दर्द से कराहता हुआ वह हकीम के पास पहुँचा। हकीम ने उसकी जाँच की। बीमारी कुछ समझ न आई। कोई नुस्खा नहीं सूझा जो मोची को आराम दे सकता। हकीम ने मोची से कहा, "भाई तुम्हारी बीमारी मेरी समझ से बाहर है। मैं तुम्हारा इलाज नहीं कर सकता।"

"ठीक है।" दुखी मन से मोची ने कहा, "जब मुझे मरना ही है, तो आखिरी ख्वाहिश पूरी करके ही मरूँगा। अपनी माँ के हाथ का सिरके वाले प्याज़ का अचार जी भरकर खाऊँगा।"

हकीम ने कँधे उचकाए, "तुम अपनी मर्ज़ी से जो चाहो, करो। कुछ हो जाए तो दोष मुझ मत देना।"

हकीम दो-तीन दिन तक मोची के बारे में बुरी खबर का इन्तज़ार करता रहा। फिर खुद ही मोची का हाल जानने चला गया। यह देखकर हकीम हैरान रह गया कि मोची अपनी बीमारी से छुटकारा पाकर काम में लगा हुआ है। घर लौटकर हकीम ने अपनी बही में लिखा, "पेट में मरोड़ उठने का एक मरीज़ मेरे पास आया। मुझे उसकी बीमारी समझ में नहीं आई। मैंने उसके लिए कोई नुस्खा तजवीज़ नहीं किया। लेकिन सिरके वाले प्याज़ का अचार खाने से वह ठीक हो गया।"

कुछ दिनों बाद एक दर्ज़ी हकीम के पास आया। उसके भी पेट में मरोड़ उठ रही थी। हकीम को फिर बीमारी समझ में नहीं आई। उसने अपनी लाचारी जतला दी। दर्ज़ी ने गिड़गिड़ाते हुए पूछा, "क्या अब मेरा कोई इलाज नहीं?"

हकीम ने सोचकर कहा, "मेरे पास तो नहीं। अलबत्ता कुछ दिन पहले एक मोची तुम्हारी तरह की बीमारी लेकर मेरे पास आया था। मैंने उसका इलाज नहीं किया था। बाद में पता चला, सिरके वाले प्याज़ का अचार खाने से वह ठीक हो गया था।"

"बड़ा अजीब इलाज है। फिर भी मैं आज़माऊँगा।" दर्ज़ी यह कहकर चला गया। शाम तक दर्ज़ी के मरने की खबर आ गई। हकीम ने अपनी बही में लिखा, "सिरके वाले प्याज़ का अचार जहाँ मोचियों के लिए रामबाण है वहीं दर्ज़ियों के लिए ज़हर है। लिहाज़ा बताने से पहले पूछ लिया जाए कि मरीज़ करता क्या है?"

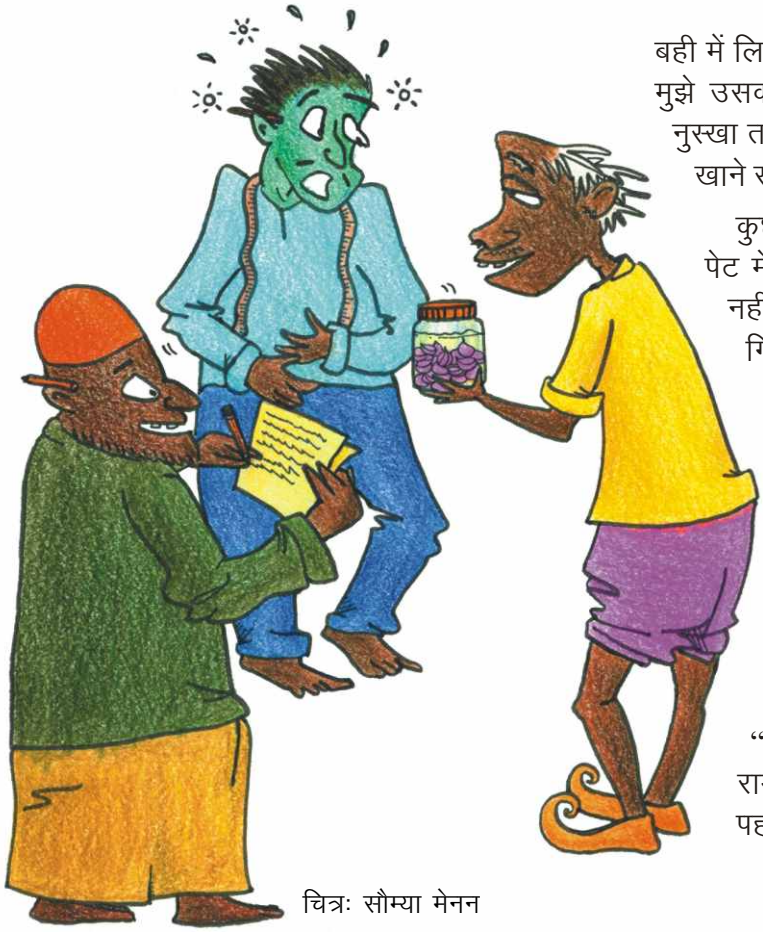

चित्रः सौम्या मेनन

शब्दपहेली

हरप्रीत क्वाटरा

क	चु	ग	ख	च	ख	चि	त्र
चि	प	क	चू	म	ग	चों	च
स	ख	च	ग	क	चू	हा	ना
चा	व	ल	ओ	ण	चै	भ	झ
चा	य	चा	बी	चु	न	ब	चा
ह	चो	र	झ	श	ची	ज़	द
च	ट	उ	ची	नी	स	चू	र
ढ़	थ	फ	ल	चौ	की	स	म

इस ग्रिड में "च" से शुरू वाले होने कई सारे शब्द हैं। तुम्हें उन्हें खोजकर उन पर गोला लगाना है।